अध्याय-7

निष्कर्ष

साल्हावास खंड जलोढ़ मैदान, अरावली की पहाड़ियों तथा थार मरुस्थल के मध्य स्थित है। साल्हावास के उत्तर में जलोढ़ मैदान स्थित हैं जिनका निर्माण सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के द्वारा बहाकर लाई गई उपजाऊ मिट्टी से हुआ है। इसके दक्षिण-पश्चिम में थार मरुस्थल के रेतीले टीले और दक्षिण में अरावली की पहाड़ियां विद्यमान हैं। सरस्वती एवम् दृषद्वती नदियों ने न केवल कृषि योग्य उपजाऊ भूमि प्रदान की बल्कि सिंचाई के लिए जल की भी आपूर्ति की। इस नदी घाटी के क्षेत्र की उपजाऊ भूमि ने अधिशेष अनाज के उत्पादन में सहायता की। सरस्वती-दृषद्वती नदियों ने हड़प्पा सभ्यता के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस क्षेत्र में इतनी अनुकूल परिस्थितियां होने के उपरांत भी हड़प्पा सभ्यता के लोग थार मरुस्थल के अर्ध-शुष्क क्षेत्र तथा अरावली की पहाड़ियों के मध्य आकर बसे। साल्हावास खंड भी अर्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह अर्ध-शुष्क जलवायु वाला क्षेत्र न हीं इतनी अच्छी कृषि योग्य भूमि तथा सिंचाई के लिए जल की आपूर्ति कर सकता था। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग उपजाऊ भूमि से इस अर्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र में किन कारणों से आए। साल्हावास खंड का पूर्वी भाग उच्च भूमि मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आता है जबकि पश्चिमी भाग उबड़-खाबड़ टीलों से युक्त रेतीला क्षेत्र है जिसे बांगर कहा जाता है। अरावली की पहाड़ियों में बहुत से खनिज तत्व मौजूद है जैसे- लौह-अयस्क, सोना, चाँदी, टिन, ताम्बा, अभ्रक, क्वार्ट्ज, चूना-पत्थर, मैंग्नीज और मार्बल (ग्रोवर और कुमार 1980)।

साल्हावास खंड के सभी हड़प्पाकालीन पुरास्थल आकार में छोटे एवं ग्रामीण स्वरूप के हैं। ये आवास अरावली के पत्थरों को शहरी केंद्र तथा कस्बों में भेजते थे क्योंकि बड़े पैमाने में सिल-लोढ़े, बांट आदि बड़े-बड़े शहरी केन्द्रों जैसे- राखीगढ़ी, हड़प्पा आदि से मिले हैं। संभवतः साल्हावास खंड के लोग दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में स्थित अरावली की पहाड़ियों से पत्थर प्राप्त कर उन्हें शहरी केंद्रों में निर्यात करते होंगे। इसके अतिरिक्त यहां के लोग क्षेत्रीय उत्पादों का निर्माण भी करते थे। झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड में स्थित बादली पुरास्थल के उत्खनन से मृदभांड में तांबे को गलाने के साक्ष्य मिले हैं (अमर सिंह एवं ठाकरान 2008: 169)। खेतड़ी नामक स्थल अरावली की पहाड़ियों में स्थित तांबे का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो इस क्षेत्र से अधिक दूरी पर स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त तांबे का

अयस्क दक्षिणी हरियाणा में स्थित तोशाम की पहाड़ी, खोडाना की पहाड़ी, खालरा की पहाड़ी तथा तीजनवाली पहाड़ी (गुप्ता और कंवर 1969: 50-51) में भी मिलता है।

साल्हासवास खंड में आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति प्रथम बार निवास करने वाली संस्कृति थी। साल्हावास खंड के सर्वेक्षण में हाकड़ा संस्कृति के रिज़र्व प्रलेप के मृदभांड (Reserved Slipped Ware), चिपकवाँ अलंकरण के मृदभांड (Mud Applique Ware) तथा हैंडल (Handle) मिले हैं। बादली के उत्खनन से आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के स्तरों से राख, जली मिट्टी के टुकड़े मिले हैं। पूर्वी हाकड़ा संस्कृति में निवास हेतु गर्त-समूह तथा मृदभांड-परंपरा भी इस काल में प्रचलित रही। इस काल में मिताथल और मानहेरू से गोलाकार गर्त-समूह के साक्ष्य मिले हैं जिनमें राख, हड्डी, कोयला, संग्रहण हेतू तथा कूड़ा-कचरा डालने के उद्देश्य से प्रयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त मानहेरू-1 से बाहर की ओर से हल्के उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड, खुरदुरे मृदभांड तथा चॉकलेट या ताम्र रंग के प्रलेप वाले मृदभांड मिले हैं। साल्हावास खंड में ढ़ाकला-3 पुरास्थल से रिजर्व स्लिप मृदभांड तथा अंदर की ओर गहरे उत्कीर्ण अलंकरण युक्त मृदभांड मिले हैं। इसके अतिरिक्त चिपकवाँ अलंकरण से युक्त मृदभांड भी मिले हैं। यहां से प्राप्त मृदभांड कालीबंगा-1 गढ़न (ए से एफ) तक के मृदभांडों से मेल खाते हैं। पूर्वी हाकड़ा चरण की विशेषताएं सोथी-सीसवाल में दिखाई देती है जबकि सीसवाल-बी में सोथी-सीसवाल संस्कृति की मृदभांड-परंपरा का विकास देखा जा सकता है। सोथी-सीसवाल चरण में लोग कच्ची ईंटों के घरों में निवास करते थे। अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का प्रयोग करते थे। कृषि एवम् पशुपालन, तकनीकी, व्यापार एवम् वाणिज्य आदि उनकी आजीविका के साधन थे। ये लोग ना केवल कच्चे माल का निर्यात करते थे बल्कि क्षेत्रीय उत्पादों का निर्माण भी करते थे। साल्हावास खंड में स्थित आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल ढ़ाकला-1 और ढ़ाकला-3 छोटे एवं ग्रामीण स्वरूप के हैं। इन पुरास्थलों पर विकसित हड़प्पाकाल को पहचानना अत्यंत कठिन है क्योंकि ग्रामीण स्वरूप के होने के कारण इन पुरास्थलों के मृदभांडों में अंतर कर पाना सरल नहीं है किंतु स्पष्ट रूप से विकसित हड़प्पाकाल के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। अर्ध-शुष्क क्षेत्र में आरंभिक हड़प्पाकाल की विशेषताएं बहुतायत से मिलती हैं।

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड से विकसित हड़प्पाकाल के प्रमाण नहीं मिले हैं। ढ़ाकला-3 पुरास्थल से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति, उत्तर हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं। संभवतः विकसित हड़प्पा काल के लोग भी इस पुरास्थल पर रहे होंगे। सीसवाल-बी चरण की विशेषताएं निरंतर प्रचलन

में रही एवं कुछ नए प्रकार के मृदभांड जैसे- बीकर, छित्रित जार, साधार-तश्तरियाँ, एस आकार के संग्रह पात्र, गोबलेट और चौड़े मुंह वाले संग्रह पात्र आदि मिलते हैं। विकसित हड़प्पाकाल में मिताथल में दो टीले मिले हैं जिन्हें निचला नगर और दुर्ग के नाम से जाना जाता है जो कि विकसित हड़प्पाकाल की मुख्य विशेषताओं में से एक है। इस काल में चक्र के आकार के सिलखड़ी के मनके, नलाकार कार्नेलियन के मनके, अर्ध निर्मित कार्नेलियन के मनके, त्रिभुजाकार केक आदि मिलते हैं। इस काल में मानहेरू एवं मिताथल ने एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (परमार 2012: 154)। इन दोनों पुरास्थलों ने कांचली मिट्टी और सिलखड़ी की वस्तुओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतः इससे स्पष्ट है कि ये आवास शहरी केंद्रों को कच्चे माल के साथ-साथ क्षेत्रीय उत्पाद की वस्तुएं भी निर्यात करते थे।

साल्हावास खंड में उत्तर हड़प्पाकालीन पांच पुरास्थल स्थित हैं। इन पुरास्थलों ने न केवल कृषि एवं पशुपालन व्यवस्था में बल्कि औद्योगिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वेक्षण के दौरान इन पुरास्थलों से सिल-लोढ़े, लोढ़े, बाँट, मिट्टी की चूड़ियाँ और अरावली के पत्थर (कच्चा माल) मिले हैं जो यह दर्शाता है कि यहाँ के लोग कच्चे माल को कस्बों एवम् शहरों तक पंहुचाते होंगे। उत्तर हड़प्पाकाल में बाह्य व्यापार में गिरावट दिखाई देती है जबकि क्षेत्रीय उत्पाद में वृद्धि परिलक्षित होती है। हरियाणा में स्थित पुरास्थलों ने अरावली पहाड़ी के पत्थरों और क्षेत्रीय उत्पाद की वस्तुओं के निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस काल में कांचली मिट्टी की वस्तुएं अत्यधिक प्रचलित थी। मिताथल कांचली मिट्टी की वस्तुओं का निर्माण का प्रमुख केंद्र था जो संभवत इन वस्तुओं को अन्य उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थलों को निर्यात करता होगा। उत्तर हड़प्पाकाल में संरचनात्मक ढांचे, मृदभांड-परंपरा, सांस्कृतिक पुरावशेषों में परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल में मिताथल के उत्खनन से कच्ची इंटें तथा मिट्टी से निर्मित संरचनात्मक अवशेष मिले हैं जो इस काल में अर्थव्यवस्था में आई गिरावट को दर्शाते हैं। इस काल में बड़ी संख्या में टूटी-फूटी कच्ची इंटें प्रयुक्त की गई जो संभवत पूर्ववर्ती चरण से लाई गई थी (सूरजभान 1975)। उत्तर हड़प्पाकाल के मृदभांडों की गढ़न, अलंकरण एवं चित्रण में अवनति दिखाई देती है। इस काल के मृदभांड मध्यम से मोटी गढ़न के तथा वजन में भारी हैं एवं ज्यामितीय चित्रण भी मिलते हैं। इस काल में पकीं मिट्टी से निर्मित वस्तुएं, पत्थर और कांचली मिट्टी से बनी वस्तुएं अत्यधिक अधिक प्रचलित थी। उत्तर हड़प्पाकाल के बाद साल्हावास का क्षेत्र बहुत समय तक वीरान रहा। पूर्व मध्यकाल के दौरान लोगों ने फिर से इस क्षेत्र में निवास करना शुरू किया।

पूर्व मध्यकाल में राजनीतिक सत्ता संघर्ष के कारण समय-समय पर क्षेत्रीय शक्तियों का आधिपत्य रहा। इस काल में कृषि, पशुपालन, व्यापार-वाणिज्य, हस्त-शिल्पी और तकनीकी में सुधार आया। पूर्व मध्यकाल का समय दीर्घकालीन था। इस काल में समय-समय पर राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन होता रहा जिसका वर्णन अध्याय-1 में विस्तार से किया गया है। सत्ता-परिवर्तन का प्रभाव व्यापारियों पर पड़ता था। इस समय के मकान कच्ची ईंटों पक्की इंटों तथा पत्थरों से बनाए जाते थे। पूर्व मध्य काल के समय कृषि एवं पशुपालन दोनों पर बल दिया जाता था। गेहूं, धान, जौ आदि फसलें उगाई जाती थी। लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन का प्रयोग करते थे। भेड़, हिरण तथा मछली आदि का मांस खाया जाता था। इसके अतिरिक्त खानपान में दूध, दही, विविध प्रकार के फल आदि भी बहुतायत में प्रयोग में लाए जाते थे। कृषि के अतिरिक्त वाणिज्य-व्यवसाय, उद्योग धंधे तथा व्यापार उन्नति पर थे। व्यापार या व्यवसाय का कार्य व्यापारिक श्रेणियों के द्वारा किया जाता था। प्रत्येक कार्य की देखरेख के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी जिसे अलग-अलग समय पर अलग-अलग पद नाम दिया गया। साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन मृदभांडो में अधिकतर लाल रंग के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से बने हुए हैं तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं। ये मृदभांड मध्यम से उत्तम गढ़न के हैं। मृदभांडो के मुख्य प्रकार घड़े, नुकीले बारी वाले कटोरे (Knife Edged Bowls), टोंटीदार बर्तन, तसले, संग्रह पात्र, ढक्कन, घुण्डीदार ढक्कन आदि हैं। इस काल के मृदभांड अंदर और बाहर दोनों तरफ से काले और सफेद रंग से चित्रित हैं। मृदभांडो की बारी के पास अंदर की ओर चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग पर बारी, गर्दन, ऊपरी हिस्से के पास चित्रण बने हुए मिले हैं। मृदभांड के आंतरिक भाग में आपस में तिरछी काटती हुई रेखाएं, पाश, लहरदार रेखाएं, तिरछी पट्टियां, क्षैतिज पट्टियां आदि चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग के चित्रण में समानांतर क्षैतिज के पट्टियां के मध्य लहरदार रेखाएं, या मोटी काली पट्टियों के मध्य सफेद रंग के बिंदु, समानांतर क्षैतिज पट्टियां, लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं के मध्य त्रिभुज, आडी तिरछी रेखाए, लंबवत एवं तिरछी रेखाओं की श्रृंखला से युक्त चित्रण सम्मिलित हैं। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों से सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी की बैल की मृण्मूर्ति, अज्ञात पक्षी की मृण्मूर्ति, कांचली मिट्टी की चूड़ी, बालुका पत्थर पर निर्मित लोढ़े, बाँट, पकीं मिट्टी के मनके आदि मिले हैं। इसके अतिरिक्त कई पुरास्थलों से पत्थर (कच्चा माल) तथा मुंढ़ेरा-5 पुरास्थल से जैस्पर पत्थर का महीन टुकड़ा मिला है जिससे स्पष्ट है कि हड़प्पाकाल में ही नहीं बल्कि पूर्व-मध्यकाल में भी इन पुरास्थलों ने क्षेत्रीय केन्द्रों की भूमिका निभाई।

इस सर्वेक्षण से साल्हावास खण्ड में कुल 48 पुरास्थल प्रकाश में आए हैं जिनमें से 1 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पा काल, 5 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकाल तथा 45 पुरास्थल पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं। इन पुरास्थलों में तीन ऐसे पुरास्थल हैं जो वर्तमान शोधकर्ता द्वारा प्रथम बार प्रतिवेदित किए गए हैं- न्यौला, मुंढ़ेरा-4, मुंढ़ेरा-5। ये तीनों पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के हैं। अधिकतर पुरास्थल एकांकी संस्कृति वाले हैं जबकि ढ़ाकला-1, ढ़ाकला-3, कासनी-1 बहु सांस्कृतिक पुरास्थल हैं। इन पुरास्थलों की आवास योजना का अध्ययन क्षेत्रफल, मृदा, स्वरूप तथा जनसंख्या के आधार पर किया गया है। मृदा के आधार पर आवास योजना का अध्ययन किया गया जिसमें यह पाया गया कि आरंभिक हड़प्पाकालीन के सभी पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं। आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थलों का कुल अनुमानित क्षेत्रफल 5 हेक्टेयर है तथा प्रत्येक पुरास्थल का औसत आकार 2.5 हेक्टेयर है। आरंभिक हड़प्पाकाल के सभी पुरास्थल ग्रामीण स्वरूप के हैं जिनके प्रत्येक पुरास्थल का आकार 5 हेक्टेयर क्षेत्र से भी कम है। साल्हावास खंड में आरंभिक हड़प्पा काल के समय कुल जनसंख्या 297 थी जिनमें प्रत्येक आवास की जनसंख्या 148.5 थी।

साल्हावास खंड के उत्तर हड़प्पाकाल के 80% पुरास्थल रेतीले क्षेत्र में स्थित हैं एवं 20% पुरास्थल जलोढ़ मैदान में स्थित हैं। उत्तर हड़प्पाकालीन सभी पुरास्थलों का कुल अनुमानित क्षेत्रफल 10.5 हेक्टेयर है जिनमें से प्रत्येक पुरास्थल का औसत आकार 2.1 हेक्टेयर है। उत्तर हड़प्पाकाल के सभी पुरास्थल ग्रामीण स्वरूप के हैं। इस काल के दौरान इन 5 पुरास्थलों की कुल जनसंख्या 623.7 थी तथा प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 124.74 थी। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के 69% पुरास्थल रेतीले क्षेत्र तथा 31 पुरास्थल जलोढ़ मैदान में स्थित हैं। पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के आवासों का कुल अनुमानित क्षेत्रफल 112.5 हेक्टेयर है तथा प्रत्येक आवास का औसत आकार 2.5 हेक्टेयर है। पूर्व मध्यकालीन 45 पुरास्थलों की कुल जनसंख्या 6682.5 थी तथा प्रत्येक पुरास्थल की औसत जनसंख्या 159.10 थी। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों में दो पुरास्थल बड़े गांव की श्रेणी में आते हैं जिनका आकार 5 से 9.9 हेक्टेयर के बीच में है तथा शेष 43 पुरास्थल छोटे गांव की श्रेणी में आते हैं।

अत: साल्हावास के क्षेत्र में सर्वप्रथम बसने वाली संस्कृति आरंभिक हड़प्पाकाल से संबंधित है। यद्यपि इनकी संख्या बहुत कम है फिर भी इनकी उपस्थिति दर्शाती है कि सहाबी और कृष्णावती नदी और अरावली की पहाड़ियों होने के कारण यह क्षेत्र उनकी आजीविका के लिए उपयुक्त था।

सरस्वती-दृषद्वती नदियों से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के लोग धीरे-धीरे दक्षिण की ओर विशेषकर अर्ध-शुष्क क्षेत्र में बसे। अरावली की पहाड़ियों के समीपता के कारण ये लोग इस क्षेत्र में आकर बसे क्योंकि अरावली की पहाड़ियों में पत्थर, खनिज तत्व तथा विभिन्न प्रकार की धातुएं आदि विद्यमान थी। लेकिन वास्तव में पूर्व मध्यकाल में बड़ी सख्यां में लोगों ने यहाँ आकर रहना शुरू किया। इस क्षेत्र में कुछ बड़े गाँव मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक भी आबाद है। यहाँ के लोगों की आजीविका मुख्यत: उच्च तकनीकी के माध्यम से कृषि पर आधारित है।